* भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
INDIAN NATIONAL CONGRESS

तारीख
23/07/2020

पवन कुमार
इतिहास विभाग, आर०एन०
कॉलेज, हाजीपुर (वैशाली)।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना सन 1885 ई० में बम्बई में पूर्व ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारी एलन ऑक्टेवियन ह्यूम (ए० ओ० ह्यम) के नेतृत्व में भारतीय बुद्धिजीवी नेताओं के सहयोग से हुआ। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक ऐसी संगठन रही, जो तमाम उतार-चढ़ाव के बीच 1885 से लेकर हिन्दुस्तान की आजादी तक के भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संघर्ष को चलाने में महती और सर्वप्रमुख भूमिका का निर्वहन किया।

कांग्रेस को इतिहासकारों ने भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष का छतरी संस्था कहा। यह ऐसी संस्था रही है, जिसमें सभी विचारधाराओं, क्षेत्रों, समुदायों से आनेवाले आजादी के दीवाने शामिल थे। दक्षिणपंथी से वामपंथी विचार वाले नेता, केरल से लेकर कश्मीर तक के नेता, गुजरात से बंगाल तक के नेता और हिन्दू-मुसलमान-सिख-इसाई सभी धर्म से आनेवाले बुद्धिजीवी और नेता कांग्रेस में रहकर हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई को लड़ा।

कांग्रेस की स्थापना को लाला लाजपत राय और कुछ अन्य इतिहासकारों (खासकर रजनी पामदत्त जैसे वामपंथी इतिहासकार) ने अंग्रेजी हुकूमत की पहल के रूप में देखना नितांत उचित बात नहीं है। हाँ, ह्यूम या अंग्रेजी हुकूमत के अन्य लोगों के मन में अगर यह भावना रही हो कि कांग्रेस के माध्यम से हम भारतीय जनमानस की खबर ले सकेंगे और साम्राज्य को मजबूत और टिकाऊ बनाने के लिए उसके मद्देनजर नीतियाँ बनाएँगे, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन कांग्रेस की स्थापना का मूल कारण भारत के पढ़े-लिखे लोगों में उस राजनीतिक चेतना का प्रस्फुटन था, जिसके कारण वे सोच रहे थे कि हम भारत के लोग अगर एक अखिल भारतीय स्तर का राजनीतिक संगठन बनाकर, सामुहिक रूप से हम अपने राष्ट्रीय हित के मुद्दों को उठाते हैं तो, हम ज्यादा सफल हो सकेंगे।

इसलिए हमें यही मानकर चलना चाहिए कि यदि ह्यूम या अन्य अँग्रेज अधिकारियों ने कांग्रेस को सुरक्षा नलिका (सेफ्टी वाल्व) के रूप में इस्तेमाल करना भी चाहा हो तो प्रारम्भिक कांग्रेस नेताओं ने इसे 'तड़ित चालक' (Lightning Conductor) के रूप में इस्तेमाल करना चाहा।

3.

नीतियों और कार्यप्रणाली के स्तर पर देखें तो स्थापना से लेकर गाँधी के आगमन तक के कांग्रेस के कार्यकाल को दो भागों में बाँटते हैं।

1885 से लेकर 1905 तक के कांग्रेस की राजनीति को नरमपंथी राजनीति का दौर कहा गया। इस कालखंड में कांग्रेसी क्रमिक सुधार के लिए प्रार्थना-पत्र, स्मृति-पत्र और प्रतिनिधिमण्डल के रूप में साम्राज्य के जिम्मेदार लोगों से अपनी माँगों को रखने और नैतिक दबाव डालने में विश्वास करते थे।

वहीं 1905 के बाद की कांग्रेसी राजनीति को उग्रपंथी या गरमपंथी राजनीति की संज्ञा दी गई। गरमपंथी कांग्रेसी बहिष्कार, स्वदेशी के उत्थान, अंग्रेजी हुकूमत के निष्क्रिय प्रतिरोध और राष्ट्रीय शिक्षा के सहारे हुकूमत पर दबाव डालकर अपनी माँगों को मनवाने के पक्षधर थे।